RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

आर्थिक आचार नीति (भारतीय सन्दर्भ में एक अध्ययन)

डॉ0 शैलेन्द्र कुमार सिंह

सहा0 आचार्य, अर्थशास्त्र, नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय, प्रयागराज

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
भारतीय , आर्थिक, आर्थिक विषमता, नैतिक

ABSTRACT

भारतीय आर्थिक चिन्तक वैज्ञानिक न होकर नैतिक एवं व्यवहारिक है, अर्थात् वैज्ञानिक अर्थशास्त्र (Positive Economics) का यहाँ अधिक विकास नहीं हुआ, अर्थनीति (Normative Economics) का ही अधिक विकास हुआ अर्थव्यवस्था कैसी हो, अर्थ के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा हो तथा समाज में अर्थ का क्या रूप हो, इन समस्याओं पर तो बहुत चिन्तन है। परन्तु धन का उत्पादन तथा वितरण सम्बन्धी विचार अधिक नहीं है और जो है भी वे स्पष्ट नहीं है। गाँधी जी के विचार भी इसी विशेषता को लिये हुये हैं। उनका अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में न होकर आदर्श के रूप में ही है। यह आदर्श कोरी कल्पना पर ही आधारित नहीं बल्कि वास्तविकता से सम्बन्धित है। यह आदर्श सम्भव है और उनकी प्राप्ति की जा सकती है मनुष्य और समाज का आर्थिक कारण क्या है? इन कारणों को भले ही न ढूंढा गया हों किंतु मनुष्य और समाज का आर्थिक आचरण कैसा होना चाहिये, इस विषय पर चिन्तकों ने प्रकाश डाला है।

भारतीय आर्थिक चिन्तकों ने शोषण और आर्थिक विषमता को सदा ही खराब बताया है। संग्रह को सभी ने बुरा बताया। भारत का आदर्श शेष संसार से भिन्न रहा है। इसकी परम्परा ही भौतिक न होकर आध्यात्मिक एवं नैतिक रही है। प्रचीन नीति का सिद्धांत है– ' यो अर्थ–शुचि स शुचिं अर्थात जिसका आर्थिक जीवन शुद्ध है वह शुद्ध है। उत्पादन, वितरण तथा विनिमय आदि आर्थिक क्रियाओं में मनुष्य को ईमानदार, उदार न्यायपूर्ण रहना चाहिए। न तो बेईमानी से किसी धन को लेना चाहिये और न किसी का प्राप्य अपने पास रखना चाहिये।

प्रस्तावना

भारतीय आर्थिक विचार भारतीय वाङ्मय का एक महत्वपूर्ण भाग है और लगभग सभी महत्वपूर्ण शास्त्रों एवं ग्रन्थों में पाये जाते है। इन विचारों के संकलन एवं प्रकाशन की दिशा में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी कोई विशेष प्रयास नहीं हुआ है और अधिकांश ज्ञान–विज्ञान वर्तमान पीढ़ी की पहुँच से बाहर है। कारण यह है कि यह सब प्राचीन भाषाओं– संस्कृत, पाली एवं प्रकृत में ही उपलब्ध है। जिनसे अधिक लोग परिचित नहीं है। इन श्रोतों को हम निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं।

1. वैदिक साहित्य– वेद, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा कल्पसूत्र आदि।
2. स्मृति ग्रन्थ– मनु, शुक्राचार्य, याज्ञवलक्य विदुर तथा नारद इत्यादि।
3. पुराण साहित्य– महाभारत, रामायण, वायुपुराण, भागवत् तथा जातक कथाएँ इत्यादि मुख्य पुराण 18 हैं
4. प्राचीन संस्कृत साहित्य– कालिदास, वाणभट्ट, भास, शुद्रक तथा दडी आदि के ग्रन्थ
5. ऐतिहासिक सामग्री– इस वर्ग में मेगस्थनीज, ह्वांनचांग, फाहियान, इब्नबतूता इत्यादि विदेशी यात्रियों के वृतान्त, अलबरूनी, फरिश्ता, अबुलफजल तथा बदायुंनी, इत्यादि इतिहासकारों के ग्रंथ स्तम्भों शिलाओं तथा सिक्कों, आदि के लेख आते हैं।

भारतीय आर्थिक विचारों के संकलन की दिशा में जो कार्य हुआ है वह नगण्य है इस विषय में श्री के0पी0 जायसवाल ने 'The Ancient Indian Policy' श्यामशास्त्री ने कौटिलीय अर्थशास्त्र, तथा के0टी0 शाह ने 'Ancient Foundation of Economics in India' आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे के0वी0एम0 सरन का 'Labour in Ancient India' इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है।

अध्ययन

भारतीय आर्थिक विचारों का प्रारम्भ तो वेदों से ही था, परन्तु अर्थशास्त्र नामक विज्ञान का प्रारम्भ डॉ0 के0पी0 जायसवाल 500 ई0पू0 मानते हैं। स्वयं कौटिल्य का शास्त्र ईसा से पूर्व चतुर्थ शताब्दी में रचित हुआ और उन्होंने अपने पूर्व के अर्थशास्त्रियों खास तौर से शुक्राचार्य तथा बृहस्पति का अभिनन्दन किया है। परन्तु यह कहना अत्यन्त कठिन है कि यह शुक्राचार्य शुक्रनीति के रचयिता थे अथवा कोई अन्य थे।

भारतीय आर्थिक विचारधाराओं को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. प्राचीन भारतीय विचारधारा– इस वर्ग में वेदों से लेकर मुस्लिम युग के प्रारम्भ तक का विचार आता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2. मध्ययुगीन विचारधारा– इसमें मुस्लिम युग का आर्थिक चिन्तन आता है।
3. राष्ट्रवादी विचारक– इसमें 19वीं और 20वीं शताब्दी के कुछ विचारक तथा रमेश चन्द्र दत्त, दादा भाई, नौरोजी, रानाडे, गोखले आदि आते है।
4. सर्वोदय का अर्थशास्त्र– यह गाँधी जी की और विनोवाभावे जी की विचारधारा है।
5. समाजवादी विचार– इस श्रेणी में जवाहरलाल नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव, सम्पूर्णानन्द, जयप्रकाश नारायण, एम0एन0 राय, राममनोहर लोहिया, एस0ए0डांगे, तथा अशोक मेहता आते है।
6. वैज्ञानिक सिद्धान्तवादी– इन व्यक्तियों ने अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक रूप का विकास किया है। जे0के0मेहता तथा ऐ0के0 दास गुप्ता इस वर्ग के अर्थशास्त्री है।
7. मुक्त अर्थव्यस्था के समर्थक– राज गोपालाचारी के0एम0 मुंशी, तथा एम0आर0मसानी इस श्रेणी में आते हैं।

अर्थशास्त्र के आदि आचार्यों में बृहस्पति का नाम अग्रगण्य है इनके विचारों का उल्लेख बाद के अधिकांश विद्वानों ने किया। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र के प्रारम्भ में ही लिखा है– ''शुक्र, बृहस्पति को नमस्कार'' यह बृहस्पति ही वस्तुतः अर्थशास्त्र के प्रथम आचार्य ये। इनके जन्म आदि के विषय में अब तक प्रमाणित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है। इनका केवल एक ग्रन्थ ही उपलब्ध है ''बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र'' यह ग्रन्थ अर्थशास्त्र का प्रथम ग्रन्थ कहा जा सकता है। बृहस्पति सम्भवतः शुक्र के समकालीन थे। सम्भवतः बृहस्पति और शुक्र का समय ईसा पूर्व से 600 तथा 500 वर्षों के मध्य में कहीं था। बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र सूत्रों में लिखा हुआ है। इसमें वर्णित कुछ विचार इस प्रकार हैः–

- दान करना चाहिये पच्चीस वर्ष तक विद्या पढ़ना, खेलना चाहिये फिर धन अर्जन करना चाहिये। ऋण करना ठीक नहीं इससे काम, क्रोध, और लोभ उत्पन्न होते हैं। नीति तो नदी के कल के वृक्ष के समान है। वह स्थायी वस्तु नहीं है।
- राजा में विद्या, अर्थ और सेना का बल होना चाहिये राजा को कृषि, गोकुल और वाणिज्य की रक्षा करनी चाहिये नीति का फल धर्म, अर्थ, और काम की सिद्धि होती है धर्म से काम तथा अर्थ की रक्षा करनी चाहिये
- ग्रामों की रक्षा करनी चाहिये वर्णाश्रम व्यवस्था की रक्षा करनी चाहिये।
- ब्रह्म मुहुर्त में उठना चाहिये धर्म तथा अर्थ का चिंतन करना चाहिये।
- अर्थ अर्जित करना चाहिये जिसके पास अर्थ होता है। उसके पास मित्र धर्म, विद्या, गुण तथा विक्रम होते हैं। धन इस जगत का मूल है सब इसलिये धन की कामना करते हैं।

शुक्रनीति का समय कौटिल्य के अर्थशास्त्र से काफी पूर्व या कौटिल्य का युग ईसा से चौथी शताब्दी पूर्व का या शुक्राचार्य के युग को अनुमानतः ईसा से 600 या 700 वर्ष पूर्व माना जा सकता है। शुक्रनीति में मुख्यतः राज्य शासन की व्यवहारिक नीति सिखाने वाला ग्रन्थ है और इसमें शासन से सम्बन्धित सब बातों पर प्रकाश डाला गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी यही पद्धति अपनायी गयी है। शुक्र के अनुसार अर्थशास्त्र के दो भेद किये गये है एक है अर्थशास्त्र का वह भाग जो राज्य शासन से सम्बन्धित है जिसका उद्देश्य प्रजा का पालन है। ''श्रुति स्मृति के अनुसार जिसमें राजा के कार्यों का वर्णन हो और धन अर्जन करने की युक्ति बताई हो वह अर्थशास्त्र है।'' अर्थशास्त्र का दूसरा भाग व्यावहारिक अर्थव्यवस्था (Applied Economics) था जिसमें समाज के उद्योग धन्धों के विकास की विधि का वर्णन होता था। शुक्रनीति में द्रव्य तथा धन की परिभाषायें मूल्य का विश्लेषण, मजदूरी सम्बन्धी विचार, धन का महत्व, लेखा सम्बन्धी विचार लोक वित्त सम्बन्धी विचारों का उल्लेख मिलता है जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुयी है।

कौटिल्य ने लिखा है, ''अर्थ मनुष्य के जीवन की वृत्ति का आधार है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल अर्थ का ही वर्णन नहीं करता, उसमें राजनीति, नीतिशास्त्र, दण्डनीति तथा वार्ता आदि का विशद वर्णन है।

गाँधी जी की दृष्टि में अर्थशास्त्र एक नैतिक विज्ञान है (Normative Science or Ethical Science) है पाश्चात्य विचारक उसे मुख्य रूप से एक प्राकृतिक विज्ञान (Positive Science) ही मानते रहे है। यह एक मौलिक अन्तर है। वस्तुतः यह केवल आर्थिक दृष्टिकोण का ही अन्तर नहीं, जीवन के प्रति पूर्व पश्चिम के दृष्टिकोण का भेद है। भारतीय आदर्श सादा जीवन को एक लक्ष्य मानकर चलता है। गांधी जी ने धन को महत्वपूर्ण मानते हुये भी उसे साधन ही माना है। उनका सिद्धांत था ' जीने के लिये खाओ, खाने के लिये मत जिओ।' इसका अर्थ यह हुआ कि उपभोग आर्थिक क्रिया का उद्देश्य नहीं है। धन का उपयोग इसलिये जरूरी है कि मनुष्य अपने कार्य को भली भांति कर सके। उन्होंने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक समझी– भोजन, वस्त्र, निवास, शिक्षा एवं इलाज को अनिवार्य बनाया परन्तु दूसरी तरफ आवश्यकताओं के कम करने पर जोर दिया। विलासिता को उनके अर्थशास्त्र में कोई स्थान नहीं है। 'सादा जीवन उच्च विचार' उनका आदर्श था। ऊँचे जीवन स्तर का आशय पाश्चात्य दृष्टिकोण से अर्थ बहुत सी आवश्यकताओं से होता है परन्तु सर्वोदय में ऊँचा जीवन स्तर ऊँचे आदर्शों और मूल्यों से निर्मित होता है।

भारत में अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुयी है। भारतीय अर्थशास्त्र व्यावहारिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में ही अधिक विकसित हुआ है। यह प्राचीन परम्परा अभी तक चली आ रही है। प्रो0 मेहता को हम भारतीय

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सिद्धांत का संस्थापक कह सकते हैं उन्होंने न केवल अर्थशास्त्र पर विशुद्ध मौलिक चिन्तन किया है बल्कि एक स्वस्थ परम्परा का प्रारम्भ किया है जो क्रमशः एक विचारधारा के रूप में विकसित हो रही है।

आवश्यकता शून्यता का सिद्धांत, प्रो0 मेहता का सबसे अधिक प्रसिद्ध सिद्धांत है। जो उनके आवश्यकता के विश्लेषण पर आधारित है और इसी सिद्धांत पर उनका आर्थिक चिन्तन आधारित है।

निष्कर्ष

भारतीय आर्थिक विचारधारा आदर्शवादी एवं नैतिक (Moral & Normaive) है, जिस कारण पाश्चात्य अर्थ में उनको अर्थशास्त्री नहीं कहा जा सकता, परन्तु उनका आदर्शवाद अव्यवहारिक नहीं है। भले ही उनके सिद्धांत विज्ञान के नियमों पर आधारित नहीं, किंतु ये सम्भव और सत्य हैं व्यक्ति और समाज का आर्थिक आचरण क्या है। और किन नियमों पर आधारित है यह उनके चिन्तन का विषय नहीं है। वे केवल यह विचार करते हैं कि आर्थिक आचरण कैसा होा चाहिये। एडमस्मिथ का कथन था कि मनुष्य अपने स्वार्थ से संचालित होता है, परन्तु गाँधी ने यह कहा है कि मनुष्य के आचरण को बदला जा सकता है। जिससे कि वह समाज के हित में संचालित हो। मनुष्य की प्रकृति को बदला जा सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि आर्थिक नियम शाश्वत नहीं हैं। उनकी दिशा बदली जा सकती है। कार्लमार्क्स भी आर्थिक नियमों को शाश्वत नहीं मानते थे। परन्तु उनके परिवर्तन का कार्यक्रम समाज को बदलने पर या वे शक्ति द्वारा शोषण बन्द करने के पक्ष में थे, किन्तु गाँधी जी का निग्रह आन्तरिक है। स्वयं अपने जीवन के द्वारा उन्होंने प्रमाणित किया कि आर्थिक क्रियायें बदली जा सकती है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या समाज के आचरण को बदला जा सकता है? उत्तर बहुत आशाजनक नहीं है। निग्रह से जनसंख्या का नियंत्रण अभी तक संभव नहीं हुआ पूँजीवादियों को ट्रस्टी बनाना शेर को घास खाना सिखाना है। अपवाद स्वरूप एकाध व्यक्ति को बनाया जा सकता है। परन्तु पूरे समाज को सेवावृत्ति सिखाना कम से कम सभ्यता के वर्तमान चरण में सम्भव नहीं है। उसके लिये बाहरी नियंत्रण अत्यन्त आवश्यक है।

मनुष्य के साथ आवश्यकता जुड़ा हुयी है। आवश्यकता के साथ पीड़ा का भाव है जिसके कारण मनुष्य का सहज आनन्द नष्ट हो जाता है इस पीड़ा को दूर करके मनुष्य अपने साम्य (Equilibrium) को पुनः प्राप्त करना चाहता है। इसीलिये वह आवश्यकता से छुटकारा पाना चाहता है आवश्यकता से छुटकारा दो प्रकार से पाया जा सकता है– एक तो उसकी पूर्ति करके कम से कम समय के लिये उससे मुक्ति पायी जा सकती है। दूसरा तरीका यह है कि आवश्यकताओं को उत्पन्न ही न होने दिया जाय यह तरीका निग्रह और संयम का माग्र है और पहले की अपेक्षा श्रेष्ठ है। अर्थशास्त्र मनुष्य के इन्ही प्रयासों का अध्ययन करता है। मनुष्य का आदर्श आवश्यकता शून्यता है आर्थिक समस्या आवश्यकता से छुटकारा पाने की समस्या का नाम है।

सन्दर्भ सूची

[1]. जे0के0मेहता, उच्चतर आर्थिक सिद्धांत द्वितीय संस्करण
[2]. जे0सी0 कुमार प्रताप : गाँधीवादी अर्थव्यवस्था एवं अन्य निबन्ध।
[3]. दादा भाई नरोजी : पॉवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्या, पृ0–2
[4]. पी0के0 गोपाल कृष्णन् : डेवलेपमेंट ऑफ इकोनॉमिक आइण्डियास इन इण्डियास, पृ0–47
[5]. आर0पी0 कांग्ले : द कौटिल्य अर्थशास्त्र, पृ0–3

RRIJM 2015, All Rights Reserved